साहित्य साधना

डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ

सम्पादक

डॉ. अशोक मर्डे

डॉ. विनोदकुमार वायचळ

Scanned with CamScanner

साहित्य साधना

डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ

Scanned with CamScanner

साहित्य साधना

डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ

सम्पादक

डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे

डॉ विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

अमन प्रकाशन

कानपुर

Scanned with CamScanner

☞ इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचार प्रसारित नहीं किया जा सकता।

पुस्तक : साहित्य साधना (डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ)
सम्पादक : डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे
डॉ विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
आई.एस.बी.एन. : 978-93-91913-00-7
संस्करण : प्रथम, सन् 2021
© : सम्पादक
मूल्य : ₹ 795.00 मात्र
प्रकाशक : अमन प्रकाशन
104-ए /80 सी, रामबाग, कानपुर-208 012 (उ.प्र.)
मो. : 09839218516, 9044344050
फोन : 0512-3590496 (ऑफिस)
शब्द सज्जा : अमन ग्राफिक्स, रामबाग, कानपुर
मुद्रक : आर.बी.ऑफसेट प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

SAHITYA SADHNA (Dr. Devidas Engley Gourav Granth)
Edited by : Dr. Ashok Vasantraw Marde, Dr. Vinodkumar Vaychal
Price : Rs. Seven Hundred Ninty Five Only

Scanned with CamScanner

14 राग–विराग के अनुरागी : श्रीलाल शुक्ल 84–88
डॉ. विनय चौधरी

15 देश और विदेश में हिन्दी भाषा की स्थिति 89–94
प्रो. डॉ. मुकुंद गायकवाड़

16 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संत कवि रैदास के विचार 95–100
प्रो. डॉ. आसाराम बेवले

17 21 वीं सदी के हिन्दी कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श 101–105
प्रो. डॉ. अनुराध मिरगणे

18 संवेदनशील कवि राजेश जोशी 106–109
प्रो. डॉ. अशोक मर्डे

19 संस्कृत भाषा के ऐतिहासिक नाटक : शोधकार्य का एक उपेक्षित क्षेत्र 110–116
डॉ. विनोदकुमार वायचळ

20 'अभंग–गाथा' नाटक में संस्कृति बोध का चित्रण 117–121
डॉ. बालाजी गरड़

21 'चित्रलेखा' का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन : चयन तत्व के संदर्भ में 122–126
डॉ. रमेश आडे

22 21 वीं सदी : हिन्दी साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ 127–134
डॉ. दरेप्पा बताले

23 वैश्वीकरण और हिन्दी : स्थिति और दिशा 135–140
डॉ. दत्तात्रय फुके

24 सूर्यबाला कृत 'दीक्षांत' उपन्यास में अभिव्यक्त अस्थायी अध्यापक की व्यथा 141–145
डॉ. कन्नुलाल विटोरे/ प्रा. रामहरी काकड़े

25 प्रेमचंद की 'कफ़न' कहानी 146–149
डॉ. महादेव खोत

26 वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में कबीर की मानवतावादी दृष्टि 150–154
डॉ. नवनाथ गाडेकर

27 जयशंकर प्रसाद के नाटकों में अभिव्यक्त दार्शनिक विचारधारा 155–159
डॉ. रूपचंद खराडे

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषा के ऐतिहासिक नाटक : शोध कार्य का एक उपेक्षित क्षेत्र

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

"न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
न स योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते।।"

संस्कृत साहित्य के विना भारतीय साहित्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती। संस्कृत भाषा में रचित वेद, उपनिषद, श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता (महाभारत), अठारह पुराण, पंच महाकाव्य आदि ग्रन्थ हमारे जीवन के प्रत्येक अंग में रचे–बसे हैं। किन्तु फ़ारसी और अंग्रेजी की गुलाम मानसिकता से ग्रस्त अर्द्धशिक्षित लोग इस तथ्य को न जानते हैं और न ही पहचानते हैं। इसके पीछे लॉर्ड मैकाले की पूर्वजद्रोही और संतानद्रोही शिक्षा का प्रभाव है। मैकाले की मानसिकता से ग्रस्त और त्रस्त लोग संस्कृत साहित्य पर प्रायः यह आरोप लगाते हैं कि जनसामान्य से इसका कोई संबंध नहीं रहा है और इसमें कोई इतिहास चेतना नहीं है। किन्तु यह दोनों आरोप नितान्त निराधार हैं। साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा 'नाटक' सम्पूर्ण विश्व में सर्वाधिक मात्रा में संस्कृत भाषा में ही लिखे गये हैं। निरक्षर श्रमिकों से लेकर उच्चविद्याविभूषित विद्वान और जन सामान्य से लेकर तपस्वियों तक हर कोई नाटक विधा का प्रशंसक रहा है। नाटकों के माध्यम से इतिहास चेतना को बनाये रखने का अद्भूत कार्य संस्कृत नाटककारों ने किया है। वैसे तो पौराणिक आख्यानों पर भी संस्कृत में सहस्रों नाटक लिखे गये हैं, किन्तु आज–कल के इतिहासविद पुराख्यानों को इतिहास नही मानते इसलिए इन्हीं विद्वानों के द्वारा निर्धारित इतिहास की परिभाषा के अंतर्गत ही बौद्ध काल के उपरांत के काल पर ही आधारित ऐतिहासिक नाटकों का सामान्य परिचय प्राप्त करने का यह छोटा–सा प्रयास है। प्रस्तुत शोधालेख में हम ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित संस्कृत नाटकों का संख्यात्मक रीति से केवल सरसरी तौर पर परिचय पाने का प्रयास करेंगे।

सभी भारतीय भाषाओं की जननी गिर्वाणवाणी संस्कृत भाषा में 'नाटक' इस विधा का अत्यधिक महत्व है। संस्कृत नाटककारों में भास, कालिदास, हर्ष, अश्वघोष, शूद्रक, विशाखदत्त, विज्जिका, भवभूति, भट्टनारायण, मुरारी, सुबन्धु, विशाखदेव, मातृराज अथवा अनंग हर्ष, भीमट, हस्तिमल जैन, क्षेमेन्द्र, महाकवि भीम, सोमदेव, बिल्हण, महेन्द्र विक्रम, मदन,

Scanned with CamScanner

शक्तिभद्र, दामोदर मिश्र, क्षेमीश्वर, राजशेखर, वत्सराज, जयदेव, यशचन्द्र, कविराज, शंखधर, जैन रामचन्द्र, सुभट, राजा रूद्रदेव, जैन रामभद्र, मदन, विद्यानाथ, जयसिंह सूरि, रविवर्मा यादव, गंगाधर, वेदान्तवागीश भट्टाचार्य, व्यास रामदेव, वामनभट्ट बाण, जीवराम याज्ञिक, गोकुलनाथ, राजमाणिक्य देव, बालकवि, विलिनाथ, भूदेव शुक्ल, सठकोप, कुमार ताताचार्य, रामानुज, रामभद्र दीक्षित, भूमिनाथ, जगन्नाथ, आनन्दराय मखी, मलारी आराध्य, वेदान्तवागीश भट्टाचार्य, यज्ञनारायण दीक्षित, शंकर दीक्षित, सदाशिव, कृष्णदत्त, देवराज, वेंकटसुब्रह्मण्यम, पुरूसुरि, रामदेव, विठ्ठल, चोक्कनाथ, पद्मनाभ, वल्लिशाय, देवराज सूरि, विराट राघव, रामचन्द्र, सुब्रह्मण्याध्वरिन्, महामहोपाध्याय शंकरलाल, ईचम्बदी श्रीनिवासदास, बालकवि सोमनाथ, सोंठी, भद्रादिराम शास्त्री, वैद्यनाथ वाचस्पति, भट्टाचार्य पेरीकाशीनाथ शास्त्री, श्रीनिवासाचारी, पंचरत्न, मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक, श्री. पंचानन तर्करत्न, यज्ञनारायण दीक्षित, पंडित अंबिकादत्त, महालिंग शास्त्री, विश्वनाथदेव, ताड़पत्री, महामहोपाध्याय हरिदास सिद्धान्तवागीश, महामहोपाध्याय पंडित मथुराप्रसाद दीक्षित, गोपीनाथ दाधीच, सुदर्शन पति, श्रीनिचजि भीम, चिन्तामणि रामचन्द्र सहस्रबुद्धे आदि प्राचीन काल के लेकर आधुनिक काल तक के नाटककारों ने संस्कृत भाषा में विपुल मात्रा में नाटकों की रचना की है।

संस्कृत के ऐतिहासिक नाटकों में भास रचित 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' और 'स्वप्नवासवदत्तम्', कालिदास रचित 'मालविकाग्निमित्रम्', अश्वघोष रचित 'शारिपुत्र प्रकरणम्', शूद्रक रचित 'मृच्छकटिकम्', श्रीहर्ष रचित 'प्रियदर्शिका', 'रत्नावली', विशाखदत्त रचित 'मुद्राराक्षसम्' और 'देवीचन्द्रगुप्तम्', विज्जिका अथवा शीलाभट्टारिका रचित 'कौमुदी महोत्सवम्', जयसिंह रचित 'हम्मीर मदमर्दनम्', राजशेखर रचित 'कर्पूरमंजरी', कृष्ण मिश्र रचित 'प्रबोधचन्द्रोदय', यशपाल जैन रचित 'मोहराज पराजयः', यशचन्द्र रचित 'मुदित कुमुद चन्द्र', नयन चन्द्र सुरि रचित 'रम्भामंजरी', अज्ञात कवि रचित 'चन्द्रलेखः', रामपाणिपाद रचित 'लीलावती', सुबन्धु रचित 'वासवत्तानाट्यधारा', अज्ञात कवि रचित 'वीणावासवदत्ता', 'उन्मदवासवदत्ता' और 'वत्सराजचरितम्', विशाखदेव रचित 'अभिसारिका वंचिकतम्', मातृराज अथवा अनंग हर्ष रचित 'तापसवत्सराज', भीमट रचित 'मनोरमावत्सलराज', हस्तिमल जैन रचित 'उदयनराज', महेन्द्र विक्रम रचित 'मत्तविलास प्रहसनम्', क्षेमेन्द्र रचित 'ललितरत्नमाला', महाकवि भीम रचित 'प्रतिज्ञाचाणक्य', सोमदेव रचित 'ललितविग्रहराज', विल्हण रचित 'कर्णसुन्दरी', मदन रचित 'पारिजात मंजरी', विद्यानाथ रचित 'प्रतापरूद्र कल्याण', गंगाधर रचित 'गंगादास प्रतापविलास', बालकवि सोमनाथ रचित 'रामवर्मविलास' और 'रत्नकेतूदय', वेदान्तवागीश भट्टाचार्य रचित 'भोजराज सच्चरित', यज्ञनारायण दीक्षित रचित 'रघुनाथ विलास', चोक्कनाथ रचित 'सेवन्तिका परिणय' और

Scanned with CamScanner

'कान्तिमती परिणय', सदाशिव रचित 'वसुलक्ष्मीकल्याणम्', सुब्रह्मण्याध्वरिन् रचित 'वसुलक्ष्मीकल्याणम्', देवराज सूरि रचित 'बालमार्तण्ड विजय', विश्वनाथदेव रचित 'मृगांकलेखा', अज्ञात कवि रचित 'राजविजयनाटकम्', श्री. मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक रचित 'छत्रपति साम्राज्यम्', 'प्रतापविजयम्' और 'संयोगितास्वयंवरम्', श्री. पंचानन तर्करत्न रचित 'अमरमंगलम्' और 'अनारकली', महामहोपाध्याय हरिदास सिद्धान्तवागीश रचित 'मेवाड़ प्रताप', 'बंगीय प्रताप' और 'शिवाजी प्रताप', महामहोपाध्याय मथुरा प्रसाद दीक्षित रचित 'वीर प्रताप नाटकम्', 'पृथ्वीराजविजयम्', 'गान्धी विजयम्' 'भारत विजयम्', गोपीनाथ दाधीच रचित 'माधवस्वातन्त्र्यम्' अथवा 'चन्द्रविजयम्', सुदर्शन पति रचित 'सिंहल विजयम्', श्रीनिचजि भीम रचित 'कश्मीरसन्धान समुद्यम्', चिन्तामणि रामचन्द्र सहस्रबुद्धे रचित 'अवदलमर्दनम्' आदि।

उक्त सूची के अतिरिक्त हज़ारों ऐसे ग्रन्थ हैं, जो विदेशी–विधर्मी आक्रान्ताओं ने नष्ट कर दिये होंगे। अब कोई आधुनिक विचारधारा से अनुप्राणित पढ़त मूर्ख यह भी कह सकता है कि इस प्रकार के अनुसन्धान से क्या लाभ होगा? उपर्युक्त सूची के देखने के पश्चात् किसी भी अन्य भाषा में इतने ऐतिहासिक नाटक रचे गये होंगे, इस बात पर विश्वास करना कठिन हो जायेगा। किन्तु संस्कृत भाषा में इतने ऐतिहासिक नाटक लिखें गये हैं, खेले भी गये हैं, इस तथ्य को कोई मूढ़ ही नकार सकता है।

यद्यपि संस्कृत भाषा में ऐतिहासिक साहित्य बहुत बड़ी मात्रा में लिखा गया है, तथापि संस्कृत नाटकों में ऐतिहासिकता भी बहुत बड़ी मात्रा में मिलती है। नाटक में वस्तु, नेता, अभिनय और रस ये चार तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। संपूर्ण संस्कृत नाटक साहित्य को निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है – विशुद्ध ऐतिहासिक नाटक, इतिहास प्रधान ऐतिहासिक नाटक और कल्पना प्रधान ऐतिहासिक नाटक! इन नाटकों की कथावस्तु प्रख्यात और मिश्र पद्धति की है। ऐतिहासिक कथानक होने के कारण इनकी वस्तु उत्पाद्य (काल्पनिक) हो ही नहीं सकती। उक्त नाटकों की कथावस्तु में पाँचों अर्थप्रकृतियों – बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी, कार्य, पाँचों अवस्थाओं – आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम, पाँचों सन्धियों – मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श, निर्वहण और चौंसठ संध्यंगों का समावेश होता है।

महात्मा गौतम बुद्ध जी से लेकर महात्मा गान्धी जी तक के कालखण्ड पर शायद ही किसी अन्य भाषा में इतना विपुल ऐतिहासिक नाटक साहित्य प्राप्त होगा। इतना ही नहीं संस्कृत ऐतिहासिक नाटकों के रचनाकारों में भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त जैसे कश्मीर, राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, असम, मध्यदेश, आन्ध्र, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडू के रचनाकारों ने बहुमूल्य योगदान किया है। साथ–ही–साथ

Scanned with CamScanner

वैदिक मतावलम्बियों, शैवों, वैष्णवों से लेकर बौद्ध–जैन मतावम्बियों तक अभी दार्शनिक विचारधारा के रचनाकारों ने इस सारस्वत अनुष्ठान में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया है। इन नाटककारों में पुरूष नाटककारों के साथ–साथ विज्जिका और शीला भट्टारिका जैसी महिलाओं ने भी अपना योगदान किया है।

हिन्दी के मूर्द्धन्य नाटककार जयशंकर प्रसाद जी द्वारा विशाखदत्त के नाटक 'देवीचन्द्रगुप्त' नाटक के हिन्दी रूपान्तर 'ध्रुवस्वामिनी' का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। वत्सराज उदयन के जीवन पर आधारित नाटकों का डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकी 'उदयन' पर प्रभाव भी अनुसन्धान का विषय हो सकता है। इतना ही नहीं हिन्दी के अन्य ऐतिहासिक नाटकों जैसे नीलदेवी, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त मौर्य, ध्रुवस्वामिनी, स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य, राज्यश्री, शिवा साधना, वितस्ता की लहरें, शक विजय, पृथ्वीराज की आँखें, औरंगज़ेब की आखिरी रात, विशाख, पद्मावती, महाराणा प्रताप, श्रीहर्ष, संयोगिता स्वयंवर, अमरसिंह राठौड़, सिंहल विजय, हठी हम्मीर, चन्द्रसेन, कोणार्क आदि नाटकों के कथानकों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।

इस प्रकार के अनुसन्धान से भारत की बहुत सी ऐतिहासिक घटनाएँ उजागर हो जायेंगी और बहुत सी शंकाओं–संदेहों का समाधान भी हो जायेगा। उस काल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक और साहित्यिक परिस्थितियों को हम अच्छी तरह से समझ सकते हैं। वर्णव्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, नारी की स्थिति, शिक्षा, संस्कार, हिन्दू धर्म के विविध सम्प्रदायों के साथ–साथ बौद्ध–जैनादि नास्तिक सम्प्रदायों को व्यावहारिक सम्बन्ध एवं दार्शनिक आदान–प्रदान एवं धार्मिक समन्वय का भी विशेष अध्ययन किया जा सकता है।

तत्कालीन राजनीति, राजा और उसके कर्तव्य, मंत्रिपरिषद तथा उसके कार्य, युद्धनीति, आयुधागार, कूटनीति, रणनीति, सैनिक व्यवस्था, गुप्तचर व्यवस्था, दण्ड विधान आदि का अध्ययन और तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। 'मृच्छकटिकम्' और 'मुद्राराक्षसम्' जैसे नाटकों के अध्ययन से राजनैतिक रूढ़ियों और गुप्तचर व्यवस्था का भी अध्ययन किया जा सकता है। 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' नाटक के अध्ययन से तत्कालीन राजव्यवस्था में प्रधान और मन्त्रियों की भूमिका समझ सकते हैं।

उक्त नाटकों में नेता के रूप में धीरोदात्त, धीरललित, धीरप्रशांत, धीरोद्धत्त नायकों का चित्रण किया है। स्वकीया, परकीया, सामान्य नायिका का चित्रण किया है। विदूषक, पताका नायक और प्रतिनायक भी महत्वपूर्ण चरित्र होते हैं। उक्त नाटकों में ऐतिहासिक चरित्र निम्न प्रकार से हैं – वत्सराज उदयन, वासवदत्ता, मंत्री यौगन्धरायण, आरूणि, तापसी, पद्मावती, प्रद्योत, हंसक, घोषवती, भरतरोहक, दर्शक, ब्रह्मचारी, वसन्तक, शतानीक, महासेन, गौतम बुद्ध, शारीपुत्र, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, अशोक, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, पुष्यमित्र शुंग, अग्निमित्र, वसुमित्र, मालविका, अन्तपाल, धारिणी,

Scanned with CamScanner

वीरसेन, कौशिकी, माधवसेन, यज्ञसेन, मधुकारिका, समाहितिका, बकुलवनिका, सारसिका, उद्यानपालिका, सुमति, कुणाल, मेनेन्द्र, पालक, गोपाल दारक आर्यक, चारूदत्त, वसन्तसेना, रूद्रदामन, मैत्रेय, संवाहक, कर्णपूर, मदनिका, रदनिका, शर्विलक, रोहसेन, शकार, चन्दनक, वीरक, स्थावरक, माथुर, रेभिल, धूता, सज्जनक, विजयसेन, दृढ़वर्मा, विन्ध्यकेतु, वासवदत्ता, प्रियदर्शिका, मनोरमा, रत्नावली, सिंहलराज सागरिका, सुसंगता, वसुभूति, बाभ्रव्य, रूमण्वान, विजयसेन, विजयवर्मा, विक्रमबाहु, अमात्य राक्षस, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, पर्वतेश्वर, मलयकेतु, भागुरायण, क्षपणक जीवसिद्धि, शकटदास, चन्दनदास, चित्रवर्मा, सिंहनाद, पुष्कराध्यक्ष, सिन्धुषेण, विराधगुप्त, सिद्धार्थक, भद्रभट, रामगुप्त, ध्रुवदेवी, चन्द्रगुप्त, शत्रुंजय, शकपति, कुंजरक, कुमार कल्याण वर्मा, कीर्तिमती, मधुमंजरिका, भामिनिका, कीर्तिसेन, निपुणिका, सुन्दरवर्मा मगधेश्वर, चण्डसेन, मन्त्रगुप्त, शबरपुलिन्दी, सिंहरण, तुरूष्क, तेजपाल, वस्तुपाल, वीरधवल, सोमसिंह, उदयसिंह, धारवर्ष, भीमसिंह, विक्रमादित्य, सहजपाल, निपुणक, लावण्यसिंह, सिंहणदेव, संग्रामसिंह, कुशलक, सर्फरखान, कुरपाल, प्रतापसिंह, जयतल्ल देवी, धवलक, बज्रदीन, अर्णोराज, चाणक्य, विन्ध्यकेतु, विग्रहराज (बीसलदेव), शशिप्रभा, देवलदेवी, श्रीधर, विजयचन्द्र, मदनराज्ञी, सुवेग, राम, त्रिमलदेव, राजा कर्णदेव, जगकेशिन्, राजा जयसिंह, राजा अर्जुनवर्मन्, चालुक्य राजा, जयश्री, गोपाल व्यास, चक्रधर व्यास, भोज, सुरजन, गंगादास, प्रतापदेव, सुलतान महमूद शाह, हरिराम, प्रतापदेवी, प्रतापरूद्र, राजा रघुनाथ, चन्द्रकला, प्रतिमामती, विजयकेतु, सेवन्तिका, मित्रवर्मा, वसवभूपाल नरेन्द्र, चित्रवर्मा, गोदवर्मा, शाहजी, कान्तिमती, वसुलक्ष्मी, राजा रामवर्मा, अन्तपाल, वसुमतराज, दुर्गपाल, नीतसागर, बालमार्तण्ड श्री पद्मनाथ, शुचीन्द्र, पांड्यराजा, मृगांकलेखा, कर्पूरतिलक, कामेश्वर, शंखपाल, चण्डघोष, नीतिवृद्ध, पृथ्वीराज चौहान, संयोगिता, जयचन्द, चन्दबरदाई, मोहम्मद ग़ौरी, महाराणा प्रताप, अकबर भामाशाह, जहाँगीर, अनारकली, राणा अमरसिंह, राजा जयवल्लभ, छत्रपति शिवाजी महाराज, औरंगज़ेब, सवाई रामसिंह (द्वितीय), कायमसिंह, माधवसिंह कान्तिचन्द्र बॅनर्जी, महात्मा गान्धी जी आदि के ऐतिहासिक व्यक्तित्व के अनछूए आयामों पर भी प्रकाश डाला जा सकता है।

प्रत्येक नाटक में नारी चरित्र की प्रधानता उस समय के समाज में नारी की स्थितियों पर प्रकाश डाल सकती है। महारानी, युवरानी से लेकर दासी, ताम्बुलवाहिनी, नर्तिका, योगिनी आदि नारी के विविध रूपों का स्त्री–विमर्श की दृष्टि से अध्ययन किया जा सकता है। साथ–ही–साथ सैनिक, श्रमिक, कृषक, धीवर आदि श्रमजीवी वर्ग का दलित चेतना युक्त अध्ययन किया जा सकता है।

देश के संदर्भ में देखा जाये तो कौशाम्बी, उज्जयनी, मालव कांचुकीय प्रदेश, मगध, कुसुमपुर, पाटलिपुत्र, लावाणक, राजगृह, कांपिल्य विदर्भ, विदिशा, सिन्धु, अवन्ती, लिच्छवी गणराज्य, मारवाड़, व्याघ्रपल्ली धवलगढ़, स्तंमपुरी, पुणे, पर्णालपर्वत, केरल, रामेश्वर, पाण्ड्य, चोल

Scanned with CamScanner

काकतीय, देवगिरी, अमरावती आदि स्थानों का उल्लेख प्राप्त होता है। इस प्रकार एक बृहद् भारत की अवधारणा का भौगोलिक अध्ययन भी हो सकता है। इन सभी नाटकों में बौद्ध ग्रन्थ, जैन ग्रन्थ, ब्राह्मण ग्रन्थ, बृहत्कथा, कथा–सरित्सागर, विष्णुपुराण, हर्षचरित, अष्टाध्यायी महाभाष्य, थेरावली, दिव्यावदान आदि ग्रन्थों में उक्त नाटकों की कथाएँ प्राप्त होती हैं। इन कथाओं का साहित्यिक अध्ययन भी हो सकता है।

नाटक की आत्मा 'रस' होता है। इन नाटकों में श्रृंगार, हास्य, करूण, वीर, रौद्र, भयानक, बीभत्स, अद्‌भूत और शान्त इन नौ रसों का परिपाक किया है। उक्त नाटकों में वीर और श्रृंगार रस ही अंगी रस में उपलब्ध होते हैं। अन्य रस गौण रूप में निष्पन्न होते हैं।

नाटक का प्रस्तुतिकरण 'अभिनय' के माध्यम से ही होता है। अभिनय चार प्रकार का होता है – कायिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक! जो उक्त नाटकों में पूरी तरह से दिखाई देता है।

शिल्प की दृष्टि से देखा जाये तो उक्त सारे नाटक रूपक और उपरूपक के सभी प्रकारों यथा नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथि, अंक, ईहामृग, नाटिका, त्रोटक, गोष्ठी, सट्‌टक, नाट्‌यरासक, प्रस्थापक, उलाप्य, काव्य, प्रेङ्‌खण, रासक, संलापक, श्रीगदित के शिल्प में रचना की है। इन नाटकों में सूत्रधार, नट, नटी ये तीन महत्वपूर्ण पात्र होते हैं, जो नाटक का आरम्भ करते हैं। नाटक का आरम्भ नान्दी से होता है और नाटक का समापन भरतवाक्य से होता है। विष्कम्भक, प्रवेशक, चूलिका, अंकावतार और अंकमुख (अंकास्य) ये पाँच अर्थोपक्षेपक प्रयुक्त किये हैं। आत्मगत और प्रकट ये दो प्रकार के संवाद होते हैं। उक्त नाटकों में ये सारे अर्थोपक्षेपक दिखाई देते हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण विषय भाषावैज्ञानिक अध्ययन होगा। उक्त संस्कृत नाटकों में दास–दासी, सैनिक–श्रमिक वर्ग के पात्रों में आपस में होनेवाली चर्चा के आधार पर तत्कालीन प्राकृत भाषा का अध्ययन भी किया जा सकता है। उक्त नाटकों में भाषा के संस्कृत–प्राकृत दोनों भेद दिखाई देते हैं। प्राकृत के भेदों में पालि, अर्द्धमागधी, मागधी, शौरसेनी, गौड़ी, पैशाची, शकारी आदि का प्रयोग मिलता है।

हमारे विचार में सबसे महत्वपूर्ण विषय यह है कि मध्यकालीन इतिहास के पुनर्लेखन के कार्य में उक्त संस्कृत नाटकों के अध्ययन से भी बहुत कुछ सहायता प्राप्त हो सकती है। क्योंकि लगभग दो हज़ार वर्षों की गुलामी के कारण हमारा सही इतिहास समाने या तो खंडित रूप में आ रहा है या फिर आक्रान्ताओं के षड्‌यन्त्र के अनुसार ही लिखा और पढ़ा जा रहा है। इससे हमें हमारे पूर्वजों की ग़लतियों का भी एहसास हो जायेगा और भविष्य में इन ग़लतियों के पुनरावर्तन का प्रसंग भी टल सकेगा।

Scanned with CamScanner

भविष्य में अनुसन्धित्सु सुधीजन इस विषय को लेकर अत्यन्त गंभीरता से शोधकार्य करने का मौलिक प्रयास करेंगे इस आशा के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1) संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

2) संस्कृत साहित्य का इतिहास – वाचस्पति गैरोला, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

3) संस्कृतसाहित्येतिहासः – आचार्य लोकमणि दाहलः, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

4) संस्कृत के ऐतिहासिक नाटक – डॉ. श्याम शर्मा, देवनागर प्रकाशन, चौडा रास्ता, जयपुर

5) संस्कृत एवं हिन्दी के ऐतिहासिक नाटक – डॉ. राजेश्वर मिश्र, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर

6) प्रतिज्ञायौगन्धरायण – भास, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

7) स्वप्नवासवदत्तम् – भास, सं. डॉ. धर्मेन्द्रकुमार गुप्त, मेहरचंद लछमनदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली

8) मुद्राराक्षसम् – विशाखदत्त, सं. डॉ. निरुपण विद्यालंकार, साहित्य भंडार, मेरठ

9) मृच्छकटिकम् – शूद्रक, सं. डॉ. जयशंकरलाल त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

10) मालविकाग्निमित्रम् – कालिदास, सं. आचार्य रामचन्द्र मिश्र, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

Scanned with CamScanner